शोध मंथन Vol. XVI No.4 Oct.- Dec. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvi-dec-2025-no4*

भारतीय ज्ञान–परम्परा एवं आधुनिक भारतीय शिक्षा के संदर्भ में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 30.11.25
स्वीकृतः 12.12.25

78

डॉ. मणि जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर
बी.एड. श्री जय नारायण मिश्र
पी.जी. कॉलेज, लखनऊ
ईमेलः *manijoshi9@yahoo.in*

सारांश

भारतीय ज्ञान–परम्परा जहाँ आत्मविद्या, समग्र चेतना, अनुभूति–केन्द्रित सीखने, और व्यक्ति तथा ब्रह्मांड की एकात्मकता को महत्व देती है, वहीं जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन भी इन मूल्यों के साथ अद्‌भुत रूप से संगत दिखाई देता है। वे शिक्षा को मनोवैज्ञानिक मुक्ति, स्व–अन्वेशण और जागरूकता की प्रक्रिया मानते थे, जो किसी निश्चित विचारधारा या अनुशासन से बँधी नहीं होती। उनके विचार में शिक्षा का उद्देश्य 'संपूर्ण मानव' का निर्माण है, जो भय, अनुकरण, प्रतिस्पर्धा और अहं की सीमाओं से मुक्त होकर सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव कर सके। जिद्दू कृष्णमूर्ति का ''अवलोकन बिना किसी चयन के'',''स्वतंत्रता के भीतर अनुशासन'' तथा ''सीखना ही जीना है'' जैसे सिद्धांत भारतीय ऋषि–परम्परा के 'स्वाध्याय', 'अद्वैत', 'साक्षीभाव' और 'मुक्ति' की अवधारणाओं से गहरे रूप से जुड़े हैं। इस प्रकार स्पष्ट रूप से जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन न केवल आधुनिक शिक्षा की सीमाओं की आलोचना करता है, बल्कि ऐसी शिक्षा का प्रस्ताव भी करता है जो आंतरिक शांति, करुणा, नैतिकता, और आत्म–चेतना को विकसित कर सके। भारतीय दार्शनिक परम्परा और जिद्दू कृष्णमूर्ति के विचारों के बीच यह अंतर्सबंध समकालीन शिक्षा प्रणाली के लिए एक वैकल्पिक, मानवीय और आध्यात्मिक रूप से उन्नत मॉडल प्रस्तुत करता है। समग्रतः, यह शोध–पत्र जिद्दू कृष्णमूर्ति के विचारों की भारतीय ज्ञान–विरासत में स्थित प्रासंगिकता और उनके संभावित शैक्षिक योगदान को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द

भारतीय ज्ञान परम्परा, जिद्दू कृष्णमूर्ति, समग्र–शिक्षा, शैक्षिक दृष्टिकोण, आधुनिक भारतीय शिक्षा

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.78

प्रस्तावना

भारत में शिक्षा का इतिहास अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और विविधतापूर्ण है। भारतीय ज्ञान–परम्परा सदियों से आत्म–ज्ञान, नैतिकता, करुणा, विवेक और ज्ञान की खोज पर आधारित रही है। यह परम्परा केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं बल्कि आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति की समर्थक रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में आधुनिक काल के एक महत्वपूर्ण दार्शनिक और शिक्षक जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षण–दर्शन विशेष ध्यान आकर्षित करता है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षण दर्शन पारंपरिक शैक्षिक ढांचों, परीक्षा–केंद्रित पद्धतियों, अनावश्यक अनुशासन, भय–आधारित अनुशासन और सामाजिक संस्कारों से मुक्ति की वकालत करता है। उनका केंद्र–बिंदु है – मनुष्य को उसके भीतर के भय, संघर्ष, भ्रम, प्रतिस्पर्धा और नकली पहचान से मुक्त करना ताकि वह सीखने की प्रक्रिया में स्वतंत्र, संवेदनशील और जागरूक हो सके।

भारतीय ज्ञान परम्परा में भी आत्म–ज्ञान का महत्व अत्यधिक है – उपनिषदों का " आत्म वैद" (आत्मा ही ज्ञान है) सिद्धांत, गीता का "निष्काम कर्म" सिद्धांत, योग की "चित्तवृत्ति निरोध" प्रक्रिया, और गुरु–शिष्य परम्परा में जीवन–शिक्षा पर बल। यह शोध लेख इसी प्रतिच्छेदन, साम्य व विरोधाभासों और संपूर्ण शिक्षण–दर्शन के आधुनिक अनुप्रयोग का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान–परम्परा सदियों से समग्र, अनुभवपरक तथा आत्मानुभूत शिक्षण की आधारभूमि रही है, जहाँ शिक्षा को केवल सूचना–प्राप्ति या व्यवसायिक दक्षता तक सीमित न मानकर ''स्वयं की पहचान''और''मुक्ति''की दिशा में एक सतत साधना माना गया है। उपनिषदों की 'स्व–ज्ञान' की परम्परा, बुद्ध के 'जागरण' का संदेश, तथा भगवद्गीता के 'निष्काम कर्मयोग' जैसे दार्शनिक स्रोत भारतीय शिक्षा की मूल धारा को आन्तरिक परिवर्तन, विवेकशीलता और मानसिक अनुशासन की ओर उन्मुख करते हैं।

इसी प्रासंगिक परम्परा में जिद्दू कृष्णमूर्ति (1895–1986) एक ऐसे दार्शनिक और शिक्षाविद् के रूप में उभरते हैं जिन्होंने शिक्षा को मनोवैज्ञानिक मुक्ति, जिज्ञासा–आधारित अन्वेषण और चेतना–परिवर्तन का माध्यम माना। जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली मनुष्य को प्रतियोगिता, भय, अनुकरण और मानसिक बन्धनों की ओर ले जाती है, जबकि वास्तविक शिक्षा वही है जो व्यक्ति को ''क्या है?'' की प्रत्यक्ष समझ और''मन की पूर्ण स्वतंत्रता'' प्रदान करे। उनका यह दृष्टिकोण भारतीय चिंतन की 'स्वातन्त्र्य' और 'अद्वैत' परम्परा से कहीं न कहीं संवाद स्थापित करता है, क्योंकि दोनों ही व्यक्ति को बाहरी संरचनाओं से अधिक आन्तरिक जागरूकता के स्तर पर परिष्कृत करने पर बल देते हैं।

भारतीय ज्ञान–परम्परा के मूलभूत तत्व – जैसे समग्रता, गुरुकुल परम्परा का गुरुदृशिष्य संवाद, प्रत्यक्षानुभूति आधारित ज्ञान, प्रकृति–सामंजस्य, तथा आत्म–चिन्तन–जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षण–दृष्टि में विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं। उनके शिक्षण केन्द्र (रिषिवैली, राजघाट, ब्रॉकवुड पार्क) इसी विचार पर कार्य करते हैं कि शिक्षा मनुष्य के भीतर भय–रहित, अन्वेशणशील और नैतिक रूप से संवेदनशील चेतना को पोषित करे। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान–परम्परा और जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों के बीच स्थित समानताओं–भिन्नताओं, संवाद–बिन्दुओं, तथा उनकी समकालीन

प्रासंगिकता का विश्लेषण करना न केवल दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आज के वैश्विक, प्रतिस्पर्धी और मनोवैज्ञानिक दबावों से भरे शैक्षिक परिदृश्य में नए विकल्पों और मार्गों को समझने के लिए भी आवश्यक है। प्रस्तुत शोध इसी उद्देश्य को केन्द्र में रखकर भारतीय संदर्भ में कृष्णमूर्ति के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है।

भारतीय ज्ञान–परम्परा : शैक्षिक दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान–परम्परा हजारों वर्षों में विकसित ऐसी समग्र एवं बहुस्तरीय बौद्धिक धरोहर है, जिसके केंद्र में व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलित, नैतिक तथा आध्यात्मिक संबंध की स्थापना का लक्ष्य निहित है। शिक्षा के भारतीय दृष्टिकोण का मूल आधार इसी ज्ञान–परम्परा में निहित है, जो ज्ञान को केवल सूचना या कौशल अर्जन नहीं, बल्कि आत्म–विकास, सत्य–खोज और धर्म–अध्यात्म आधारित नैतिक जीवन का पथ मानती है। भारतीय ज्ञान–परम्परा का दायरा अत्यंत विस्तृत है–वेद, उपनिषद, महाभारत–रामायण, योग–तन्त्र, बौद्ध–जैन परम्पराएँ, गुरुकुल शिक्षा, और भक्ति–परम्परा तक फैला हुआ। इन परम्पराओं का साझा लक्ष्य है–मानव का समग्र विकास।

समग्रता का सिद्धांत

भारतीय ज्ञान–परम्परा शिक्षा को बहु–आयामी विकास का माध्यम मानती है – शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक। उपनिषदों का "सा विद्या या विमुक्तये" सिद्धांत इस बात को स्पष्ट करता है कि शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को स्वतंत्र, विवेकशील और जागरूक बनाना है।

ज्ञान का आध्यात्मिक–नैतिक आधार

भारतीय परम्परा ज्ञान को धर्म, सत्य, अहिंसा, करुणा और आत्मसंयम से जोड़ती है।

- गीता का "स्वधर्मे निधनं श्रेयः"
- बुद्ध का मध्यम मार्ग
- जैन परम्परा का अनेकांतवाद

ये सभी शिक्षण में नैतिकता, सत्यपरायणता और बहुसांस्कृतिक दृष्टि का आधार प्रदान करते हैं।

अनुभव–आधारित शिक्षा

भारतीय गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा अध्ययन्, आचरण्, अनुभव पर आधारित थी।

- प्रकृति के बीच जीवन
- श्रम, अनुशासन, सहजीवन
- शिक्षक एवं शिष्य का जीवंत संबंध

यह सीखने के गहन रूप, पर्यवेक्षण और स्वानुभव को शिक्षा का आधार बनाता है।

आत्म–परिक्षण और मनोवैज्ञानिक विकास

उपनिषद, योग, बौद्ध परम्परा तथा कृष्णमूर्ति के विचारों में आत्म–अवलोकन शिक्षा का मूल गुण है। भारतीय दृष्टि में ज्ञान का स्रोत भीतर भी है – "आत्मानं विद्धि" – अपने भीतर के सत्य को जानना।

प्रकृति के साथ सामंजस्य

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.78

ऋग्वैदिक दृष्टि, आयुर्वेद, वास्तु, योग और पर्यावरण–नीति सभी प्रकृति को गुरु, सहचर, आधार और सह–अस्तित्व का केंद्र मानते हैं। आज के पर्यावरणीय संकट में यह दृष्टि विषेश रूप से महत्त्वपूर्ण है।

लोक–ज्ञान और विविधता का सम्मान

भारतीय ज्ञान–परम्परा केवल शास्त्रीय परम्परा तक सीमित नहीं, बल्कि – लोक–संस्कृति, लोक–शिक्षा, समुदाय–आधारित शिक्षण, हस्तकला, कृषि, चिकित्सा, संगीत इन सभी को ज्ञान का वैध और मूल्यवान रूप मानती है।

मुक्त संवाद एवं वाद–विवाद की परम्परा

तक्षशिला, नालंदा, मिथिला, वाराणसी और बौद्ध–विहारों में शास्त्रार्थ, चर्चा, संवाद, तर्क–वितर्क शिक्षा का आधार रहे हैं। यह परम्परा आलोचनात्मक चिंतन का विकास करती है।

शिक्षा का स्वरूप

भारतीय परम्परा में शिक्षा को "विद्या" – जो जीवन मुक्तिदायिनी है – के रूप में वर्णित किया गया है। यह मात्र ज्ञान–संग्रह नहीं बल्कि पूर्ण मानव बनने की प्रक्रिया है।

उपनिशदिक शिक्षा

उपनिषदों में "आत्म–ज्ञान" – स्वयं को जानना – शिक्षा का परम लक्ष्य माना गया है। "नेति नेति", "तत्त्वमसि", "अहं ब्रह्मास्मि" जैसे महावाक्य आत्म–बोध की दिशा दिखाते हैं।

गुरु–शिष्य परम्परा

गुरु को जीवन का मार्गदर्शक माना जाता है – वह ज्ञान ही नहीं, आचार–विचार और जीवन–कला भी सिखाता है। गुरु केवल सूचना नहीं देता, बल्कि शिष्य के संस्कारों को परिष्कृत करता है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति : शैक्षिक दृष्टिकोण

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दृष्टिकोण आधुनिक भारतीय एवं वैश्विक शिक्षा–चिंतन का एक मौलिक एवं मानवीय आयाम प्रस्तुत करता है। उनका विश्वास था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल सूचना–परक ज्ञान, रोजगार या परीक्षाओं की तैयारी करना नहीं है, बल्कि समग्र मानव का निर्माण करना है – ऐसा मानव जो आत्म–जागरूक, संवेदनशील, स्वतंत्र, रचनात्मक और बौद्धिक रूप से सजग हो।

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार, शिक्षा को मानव–मन की गहराइयों को समझने का साधन बनना चाहिए। वे प्रश्न उठाते हैं कि यदि शिक्षा केवल सामाजिक प्रतिस्पर्धा, भय, अनुकरण और सुरक्षा की खोज में उलझी रहे, तो वह व्यक्ति को स्वतंत्रता नहीं, बल्कि बंधन देती है। इसलिए वे ऐसी शिक्षा का प्रस्ताव रखते हैं जो भीतर की स्वतंत्रता को विकसित करे।

शिक्षा का उद्देश्य – आत्म–परिवर्तन और मन की मुक्ति

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मन में व्याप्त भय, ईर्ष्या, महत्वाकांक्षा और हिंसा की जड़ों को समझकर उन्हें समाप्त करना है। उनका जोर सतत आत्म–अवलोकन पर है। वे कहते हैं कि जब व्यक्ति स्वयं को समझता है, तभी वह संसार को भी समझ पाता है। शिक्षा को व्यक्ति को "क्या सोचना है" नहीं, बल्कि "कैसे सोचना है" सिखाना चाहिए।

अनुकरण–विरोध और स्वतंत्र अन्वेषण

जिद्दू कृष्णमूर्ति पारंपरिक शिक्षा में व्याप्त अनुकरण, रटंतवाद और अधिकारवाद की आलोचना करते हैं। उनका तर्क है कि सत्य किसी अधिकार, गुरु या परंपरा से नहीं, बल्कि स्वतंत्र अन्वेषण से प्राप्त होता है।

इसलिए शिक्षक और छात्र का संबंध "अधिकार–निष्ठ" न होकर अन्वेषण–आधारित साझेदारी का होना चाहिए।

समग्र शिक्षा

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार, शिक्षा बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं के संतुलित विकास पर आधारित होनी चाहिए।

वे तीन मूल तत्वों पर बल देते हैं– मन की स्पष्टता, हृदय की करुणा, शारीरिक अनुशासन। उनके विद्यालय इसी समग्र दृष्टिकोण पर आधारित हैं।

भय–मुक्त शिक्षा

जिद्दू कृष्णमूर्ति मानते थे कि भय व्यक्ति की रचनात्मकता को नष्ट करता है। परीक्षा–केन्द्रित शिक्षा, दंड, तुलना और प्रतियोगिता – ये सभी भय के स्रोत हैं। इसलिए वे ऐसी सीखने–सीखाने की प्रणाली का प्रस्ताव करते हैं जहाँ – वातावरण सुरक्षित और संवाद–आधारित हो, गलतियाँ सीखने का साधन हों, मूल्यांकन विकासात्मक हो, छात्र स्वयं को अभिव्यक्त कर सके।

शिक्षक की भूमिका – मार्गदर्शक नहीं, सह–यात्री

जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक वह नहीं जो ज्ञान थोपे, बल्कि वह है जो छात्र के साथ मिलकर सीखता है। शिक्षक में – संवेदनशीलता, आत्म–चिंतन, निरन्तर जागरूकता होना अनिवार्य है। वे कहते हैं कि "शिक्षक पहले स्वयं शिक्षित हो" – अर्थात आत्म–समझ वाला हो।

प्रकृति और मौन का महत्व

जिद्दू कृष्णमूर्ति प्रकृति को शिक्षा का एक जीवंत कक्ष मानते थे। प्रकृति के साथ संवाद – संवेदनशीलता, सौंदर्यबोध, एकाग्रता, आंतरिक शांति–को विकसित करता है। वे ध्यान को किसी तकनीक के रूप में नहीं, बल्कि जागरूकता की अवस्था के रूप में समझते थे।

मूल्य–आधारित लेकिन उपदेश–रहित शिक्षा यद्यपि जिद्दू कृष्णमूर्ति नैतिक मूल्यों को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं, पर वे "उपदेशात्मक नैतिकता" का विरोध करते हैं। उनके अनुसार – मूल्य व्यवहार से आते हैं, आत्म–समझ से उत्पन्न होते हैं, उन्हें सिखाया नहीं, बल्कि जीया जाता है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दृष्टिकोण शिक्षा को मनुष्य की आंतरिक स्वतंत्रता, रचनात्मकता और करुणा के विकास के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण आज भी भारतीय ज्ञान–परम्परा के आत्म–अन्वेषण, अद्वैत, अनुभव–प्रधानता और समग्रता जैसे मूल तत्वों से गहरे स्तर पर जुड़ा हुआ है। उनकी शिक्षा–दृष्टि शिक्षकों, शिक्षाविदों और नीति–निर्माताओं को यह याद दिलाती है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य एक संवेदनशील, स्वतंत्र और जागरूक मानव का निर्माण है।

भारतीय ज्ञान–परम्परा के संदर्भ में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण

भारतीय ज्ञान–परम्परा और जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक तथा दार्शनिक विचार, दोनों ही मनुष्य की भीतरी चेतना, आत्मबोध और समग्र विकास को केन्द्रीय तत्व मानते हैं। तथापि, दोनों की पद्धति, भाषा और व्यवहारिक दृष्टि में कुछ महत्वपूर्ण समानताएँ और भिन्नताएँ दिखाई देती हैं।

1. ज्ञान का स्वरूप

भारतीय ज्ञान–परम्परा

- ज्ञान को श्रुति–स्मृति–अनुभूति की त्रयी से उद्भूत माना गया है।
- ''आत्मविद्या'' को परम लक्ष्य मानते हुए ज्ञान को मुक्तिदायी माना जाता है।
- वेदांत, योग, उपनिषदों में ज्ञान का स्रोत अन्तःकरण की शुद्धि और गुरु–शिष्य परम्परा है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति

- ज्ञान और बुद्धि या समझ में स्पष्ट भेद करते हैं।
- संचित ज्ञान को यांत्रिक बताते हुए ''निरीक्षण'' और "स्व–प्रज्ञा" को प्राथमिक मानते हैं।
- किसी परम्परा, सिद्धान्त या गुरुत्व पर निर्भर ज्ञान को भ्रमकारी मानते हैं।

दोनों ही ''ज्ञान'' को व्यक्तिगत अनुभव और स्वानुभूति से जोड़ते हैं, परन्तु भारतीय परम्परा सामाजिक–सांस्कृतिक संचरण को स्वीकारती है जबकि जिद्दू कृष्णमूर्ति किसी भी संचित परम्परा को अस्वीकार करते हैं।

2. शिक्षक–शिष्य सम्बन्ध

भारतीय ज्ञान–परम्परा

- गुरु को ''दिव्य ज्ञान'' का माध्यम माना गया है।
- गुरु–शिष्य परम्परा शिक्षण का मुख्य आधारः अनुशासन, विनय और आज्ञापालन पर बल।

जिद्दू कृष्णमूर्ति

- किसी भी "गुरु का अधिकार" अस्वीकार करते हैं।
- शिक्षक–शिष्य सम्बन्ध एक मुक्त संवाद पर आधारित होना चाहिए, जहाँ दोनों सह–शिक्षार्थी हों।

दोनों में आत्मबोध लक्ष्य है, किन्तु भारतीय परम्परा गुरु–केन्द्रित है जबकि जिद्दू कृष्णमूर्ति "गुरु–निर्भरता" को मनोवैज्ञानिक बंधन मानते हैं।

3. शिक्षा की दृष्टि

भारतीय ज्ञान–परम्परा

- शिक्षा "सर्वांगीण विकास": नैतिकता, आध्यात्म, अनुशासन, ज्ञान और कर्म का समन्वय।
- शिक्षा का उद्देश्य धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष के संतुलन में जीवन कौशल विकसित करना है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति

- शिक्षा का उद्देश्य "स्वतन्त्र मनुष्य" का निर्माण है।
- शिक्षा को मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संघर्ष से मुक्ति का साधन मानते हैं।

- भय, प्रतियोगिता, अनुकरण और तुलना को शिक्षा की सबसे बड़ी बाधाएँ कहते हैं।

दोनों "समग्र शिक्षा" की वकालत करते हैं, परन्तु भारतीय परम्परा सामाजिक धर्म–कर्तव्य पर बल देती है जबकि जिद्दू कृष्णमूर्ति व्यक्ति की पूर्ण आन्तरिक स्वतन्त्रता पर।

4. मन और चेतना का विकास

भारतीय ज्ञान–परम्परा

- मन को योग, ध्यान, तप, इन्द्रिय–निग्रह और सदाचार द्वारा शुद्ध किया जाता है।
- मन को नियंत्रित कर आत्मा के साक्षात्कार का लक्ष्य।

जिद्दू कृष्णमूर्ति

- मन को नियंत्रित करने की अवधारणा को भी संघर्ष मानते हैं।
- "निरीक्षण बिना विकल्प" के माध्यम से मन को स्वतः शांत होने का निर्देश देते हैं।

दोनों ध्यान और आत्म–अवलोकन पर केंद्रित हैं, परन्तु भारतीय परम्परा में अनुशासनात्मक "अभ्यासदृवैराग्य" की प्रक्रिया है जबकि जिद्दू कृष्णमूर्ति किसी भी अभ्यास को मानसिक संघर्ष मानते हैं।

5. समाज, संस्कृति और परम्परा पर दृष्टि

भारतीय ज्ञान–परम्परा

- परम्परा जीवन का आधार, धर्म और संस्कृति मनुष्य को आचार–संहिता प्रदान करते हैं।

जिद्दू कृष्णमूर्ति

- परम्परा, राष्ट्रवाद, धर्म और संस्कृति को मनोवैज्ञानिक बंधनों का स्रोत मानते हैं।
- व्यक्ति और समाज का परिवर्तन बाहर से नहीं, भीतर से होने पर बल।

भारतीय परम्परा संस्कृति को ज्ञान का वाहक मानती है, जिद्दू कृष्णमूर्ति इसे मानसिक विभाजन का स्रोत कहते हैं। भारतीय ज्ञान–परम्परा और कृष्णमूर्ति के विचार मनुष्य की आन्तरिक चेतना, आत्म–अनुभूति और समग्र परिवर्तन की दृष्टि से एक–दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं। अंतर यह है कि भारतीय परम्परा में परम्परा–सम्मत अनुशासन और संस्था–केन्द्रित पद्धति है, जबकि जिद्दू कृष्णमूर्ति "परम्परा–विरोधी", स्वतन्त्र और पूर्णतः मानवीय चेतना पर आधारित शिक्षा की वकालत करते हैं। दोनों ही दृष्टियाँ आज के शैक्षिक विमर्श में – विशेषकर भारत में – मानव–केंद्रित, नैतिक और स्वतंत्र विचारशील शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण दिशाएँ प्रदान करती हैं।

आधुनिक भारतीय शिक्षा के संदर्भ में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

भारतीय शिक्षा आज जिन चुनौतियों से जूझ रही है – प्रतिस्पर्धा, परीक्षा–केन्द्रितता, मूल्य–संकट, तनाव, पहचान का संकट, तकनीकी निर्भरता और मनोवैज्ञानिक दवाब – उनके बीच जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार अत्यंत प्रासंगिक हो उठते हैं। जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा–दर्शन व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास, आत्म–चेतना, स्वतंत्र चिंतन और समाज के प्रति उत्तरदायी मानव के निर्माण पर आधारित है। आधुनिक भारतीय शिक्षा, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा प्रस्तावित "समग्र, बहुविषयक, मूल्य–आधारित, अनुभवात्मक" शिक्षा में उनके विचारों की उपयोगिता स्पष्ट रूप से उभरती है।

परीक्षा–केन्द्रित शिक्षा के स्थान पर समग्र विकास

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.78

कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा केवल अंक या करियर निर्माण तक सीमित नहीं होती, बल्कि मनुष्य के भीतर विचार की स्पष्टता और जीवन की समझ का विकास करती है। आज भारत में बोर्ड परीक्षाएँ, प्रतियोगी परीक्षाएँ, कोचिंग संस्कृति आदि ने शिक्षा को अत्यधिक परीक्षा–केन्द्रित बना दिया है। ऐसे में 'समग्र विकास' की जिद्दू कृष्णमूर्ति की अवधारणा विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आत्म–अनुशासन और भावनात्मक संतुलन का मार्ग खोलती है।

स्वतंत्र चिंतन और आलोचनात्मक सोच

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी स्वतंत्र चिंतन और आलोचनात्मक सोच को प्रमुख कौशल मानती है। जिद्दू कृष्णमूर्ति कहते हैं कि "सही शिक्षा वह है जो मन को अतिविश्वास, परंपरागत जड़ता और भय से मुक्त करे।" आधुनिक भारत में जहाँ सूचना का अतिप्रवाह, सोशल मीडिया प्रभाव और समूह–सोच बढ़ रही है, वहाँ स्वतंत्र चिंतन का उनका आग्रह शिक्षा को अधिक बौद्धिक रूप से ईमानदार और प्रश्नात्मक बनाता है।

मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य और तनाव–निवृत्ति

भारतीय युवाओं में परीक्षा–तनाव, अवसाद, प्रतिस्पर्धा और आत्म–संदेह के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। जिद्दू कृष्णमूर्ति का 'स्व–चेतना', 'सजगता' और 'भावनात्मक संतुलन' पर जोर आधुनिक मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा के अनुरूप है। उनके विद्यालयों में ध्यान, प्रकृति से जुड़ाव और संवाद–आधारित शिक्षण तनाव–निवृत्ति के प्रभावी साधन रहे हैं।

नैतिक शिक्षा और मूल्य–परकता

जिद्दू कृष्णमूर्ति नैतिकता को किसी धार्मिक या अनुशासनात्मक ढाँचे के रूप में नहीं, बल्कि स्व–समझ और करुणा से उपजने वाले आचरण के रूप में देखते हैं। आज भारतीय समाज में बढ़ती सामाजिक असहिष्णुता, हिंसा, भ्रष्टाचार और विभाजन के संदर्भ में उनका दृष्टिकोण शिक्षा को नैतिक संवेदनशीलता और मानवीय मूल्य प्रदान कर सकता है।

शिक्षक की भूमिका – "सह–यात्री", न कि ज्ञान–थोपने वाला

जिद्दू कृष्णमूर्ति के विचार में शिक्षक एक मार्गदर्शक है, जो छात्र के भीतर पहले से उपस्थित जिज्ञासा और समझ को जगाता है। नई भारतीय शिक्षा–नीति भी "स्वतंत्र चिंतन" आधारित शिक्षण मॉडल का समर्थन करती है। शिक्षक – दबावमुक्त वातावरण बनाता है, संवाद आधारित शिक्षण करता है, छात्र को आत्म–अध्ययन के लिए प्रेरित करता है। उनका दृष्टिकोण शिक्षक–छात्र संबंध को अधिक मानवतावादी बनाता है।

प्रकृति–आधारित और अनुभवात्मक शिक्षण की प्रासंगिकता

जिद्दू कृष्णमूर्ति के विद्यालय प्रकृति से सीखने, अवलोकन, अनुभव और प्रत्यक्ष जीवन से जुड़ी शिक्षा पर चलते थे। आज भारत में शैक्षिक सुधार इसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यह विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना, संवेदनशीलता और स्थिरता का दृष्टिकोण विकसित करता है।

तकनीकी युग में मानवता का संतुलन

डिजिटल लर्निंग और स्क्रीन–निर्भरता के युग में शिक्षा का मानवीय पक्ष कम होता जा रहा है। जिद्दू कृष्णमूर्ति के अनुसार तकनीक मनुष्य की सृजनात्मकता को समाप्त कर सकती है यदि वह सजगता के बिना उपयोग की जाए। उनके विचार तकनीकी युग में मानव–संवेदना, आत्म–जागरण और बुद्धि के संतुलित उपयोग का मार्ग दिखाते हैं।

निष्कर्ष

जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार आज के भारतीय शिक्षा–परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक और दिशादर्शी सिद्ध होते हैं। सूचना–प्रधान, प्रतिस्पर्धात्मक और परीक्षा–केंद्रित प्रणाली में उनकी यह शिक्षा–दृष्टि– जो स्वतंत्र चिंतन, आत्म–जागरूकता, समग्र विकास और भयमुक्त वातावरण पर आधारित है – भारतीय शिक्षण–प्रक्रिया को मानवीय बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी जिद्दू कृष्णमूर्ति के कई शैक्षिक विचार – जैसे बहुविषयक शिक्षा, कौशल–विकास, कला–आधारित शिक्षण, सामाजिक–भावनात्मक अधिगम, समालोचनात्मक सोच, और 'सीखने का आनंद' – प्रत्यक्ष रूप से झलकते हैं, जो इस बात का प्रतीक हैं कि जिद्दू कृष्णमूर्ति की विचारधारा आज भी शैक्षिक सुधारों की बुनियाद है।

उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार या अंकों का अर्जन नहीं, बल्कि ऐसा मनुष्य तैयार करना है जो संवेदनशील, सजग, आलोचनात्मक, नैतिक और आत्मनिर्भर हो। आज के भारत में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ, मूल्य–संकट, सामाजिक विभाजन, तकनीकी निर्भरता और बढ़ती प्रतिस्पर्धा जैसे चुनौतियाँ जिस प्रकार उभरी हैं, उन्हें देखते हुए जिद्दू कृष्णमूर्ति का 'भीतर की स्वतंत्रता' और 'समग्र दृष्टि' वाला दर्शन शिक्षा में संतुलन और मानवता की पुनर्स्थापना का मार्ग दिखाता है।

इस प्रकार, भारतीय शिक्षा के सतत परिवर्तनशील संदर्भ में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार न केवल एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करते हैं, बल्कि ऐसी रूपरेखा प्रदान करते हैं जो विद्यार्थियों, शिक्षकों और संस्थानों को अधिक संवेदनशील, रचनात्मक एवं जागरूक दिशा में अग्रसर करने में सक्षम है। उनका शैक्षिक दर्शन शिक्षा को परीक्षा–केंद्रितता से निकालकर अनुभव, अवलोकन, आत्म–खोज और मनुष्यत्व पर केंद्रित करने का सामर्थ्य रखता है। अतः आधुनिक भारतीय शिक्षा के निर्माण और रूपांतरण में जिद्दू कृष्णमूर्ति के विचार अत्यंत उपयोगी, प्रेरणादायक और सतत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। भविष्य की शिक्षा जो मन, हृदय और जीवन – तीनों को संतुलित रूप से विकसित करना चाहती है, उसके लिए जिद्दू कृष्णमूर्ति का दर्शन एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह है।

संदर्भ

1. भारतीय शैक्षिक समीक्षा (एनसीईआरटी जर्नल)। (विविध वर्श). कृष्णमूर्ति और आधुनिक शिक्षा विषयक शोध लेख। नई दिल्ली – एनसीईआरटी।
2. दासगुप्त, सूर्यकांत। (2007). भारतीय दर्शन का इतिहास (खंड 1–5). दिल्ली – मोतीलाल बनारसीदास।
3. जोशी, एस. (2020). भारतीय दर्शन और आधुनिक शिक्षाशास्त्र। जयपुर – सुरभि प्रकाशन।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.78

4. कृष्णमूर्ति, जिद्दू। (2004). शिक्षा और जीवन का अर्थ (अनु.) राधा देवी। नई दिल्ली – राजपाल एंड संस।
5. कृष्णमूर्ति, जिद्दू। (2007). बुद्धि का जागरण। चेन्नइ – कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया।
6. कृष्णमूर्ति, जिद्दू। (2010). प्रथम और अंतिम स्वतंत्रता (अनु.) जयकृष्णन। नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
7. कृष्णमूर्ति, जिद्दू एवं बॉहम, डेविड। (2002). समय का अंत, संवाद। दिल्ली, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया।
8. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया (संपा.). (2012). कृष्णमूर्ति के विद्यालय–व्याख्यान, शिक्षक और विद्यार्थी। चेन्नइ।
9. कुलकर्णी, जी. एस. (2012). भारतीय ज्ञान – परम्परा और आधुनिकता. पुणे, भारतीय विद्या संस्थान।
10. कुमार, डी. एस. (संपा.). (2015). भारतीय ज्ञान–परम्परा, स्रोत, प्रवाह और विमर्श। नई दिल्ली – अवधेश प्रकाशन।
11. लुटियन्स, मेरी। (1996). कृष्णमूति, जीवन और कार्य (अनु.) सुषमा भारद्वाज। नई दिल्ली – वाणी प्रकाशन।
12. एनसीईआरटी। (विभिन्न वर्ष)। भारतीय ज्ञान–परम्परा और शिक्षा विषयक अध्ययन–सामग्री। नई दिल्ली – एनसीईआरटी।
13. राधाकृष्णन, सर्वेपल्ली। (1999). भारतीय दर्शन (खंड 1दृ2)। नई दिल्ली – ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. शर्मा, अवधेश। (2016). प्राचीन भारतीय शिक्षा – अवधारणा, स्वरूप और विकास. दिल्ली – अटलांटिक प्रकाशन।
15. शर्मा, रामनाथ। (2018). भारतीय शैक्षिक परम्परा और आधुनिक चिंतन। दिल्ली – अटलांटिक प्रकाशन।
16. विवेकानन्द, स्वामी। (2009). प्राचीन भारतीय शिक्षा और संस्कृति पर व्याख्यान. कलकत्ता – अद्वैत आश्रम।